ब्रोकन स्वायर टूटे हुऐ टुकडे

लक्ष्य:

1. समूह की समस्या सुलझाने में सहयोग के तत्वों का विश्लेषण करना, और
2. सहभागियों में उन व्यवहारों के बारे में चेतना जगाना जो समूह की समस्या सुलझाने में सहायक और बाधक हो सकते हैं.

समूह का आकार :

6–6 प्रशिक्षणार्थियों के कितने भी समूह. प्रत्येक समूह में पांच प्रशिक्षणार्थी और एक प्रेक्षक होंगे.

आवश्यक समय :

लगभग 45 मिनिट.

सामग्री :

1. प्रत्येक समूह क पांच प्रशिक्षणार्थियों के लिए वर्गाकार प्लास्टिक के टुकड़े जो आगे दिए गए निर्देशों के अनुसार काटे गए हों,
2. प्रत्येक समूह के लिए ब्रोकन स्क्वायर निर्देश पत्रक की एक प्रति, और
3. ब्रोकन स्क्वायर प्रेक्षक निर्देश पत्रक की एक प्रति – प्रेक्षक के उपयोग के लिए.

भौतिक व्यवस्था :

प्रत्येक समूह के पांचों सदस्यों के बैठने योग्य बड़ी टेबल की आवश्यकता होगी. यदि एक से अधिक समूह बनाए गए हों तो इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि समूह एक दूसरे के काम पर नजर न डाल सकें.

प्रक्रिया :

1. सहयोग के अर्थ से विचार–विमर्श शुरू करवाया जाता है. इसके बाद उन कारणों का विश्लेषण किया जाता है जिनसे समूह में कार्य करते हुए सफलता मिलती है. समूह को यह संकेत दिया जाता है कि इन परिकल्पनाओं को जांचने के लिए एक प्रयोग किया जाएगा. इसके आधार पर निम्नलिखित संभावित बिंदु निकल सकते हैं :

   (1) प्रत्येक व्यक्ति को पूरी समस्या समझना चाहिए,

   (2) प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि वह समस्या सुलझाने में किस प्रकार योगदान दे सकता है,

   (3) प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के संभावित योगदान के बारे में जानकारी होनी चाहिए, यदि हम चाहते हैं कि दूसरे सदस्य अपना अधिकतम सहयोग दे सकें तो हमें उनकी समस्याओं का पता लगाने की आवश्यकता है, और

   (4) वे समूह जो अपनी स्वयं की समस्याएं सुलझाने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, अधिक प्रभावी होते हैं, बजाय उनके जो इस पर ध्यान नहीं देते.

2. पांच–पांच प्रशिक्षणार्थियों (एक–एक अतिरिक्त प्रशिक्षणार्थी प्रेक्षक के कार्य हेतु) के समूह बनाए जाते हैं और प्रेक्षकों को ब्रोकन स्क्वायर निर्देश पत्रक की एक–एक प्रति दी जाती है. पांचों लिफाफे समूह के सदस्यों में बांट दिए जाते हैं और यह निर्देश दिया जाता है कि संकेत मिलने से पहले लिफाफों को न खोला जाए.
3. ब्रोकन स्क्वायर निर्देश पत्रक समूहों को बांटे जाते हैं और इन्हें पढ़ने के बाद किसी भी कठिनाइ या समझ में न आने वाली बात के बारे में पूछा जाता है,
4. इसके बाद काम शुरू करने का संकेत दिया जाता है. यह महत्वपूर्ण है कि इस पूरे अभ्यास के दौरान सभी टेबलों पर निगरानी रखी जाए कि नियमों का पालन किया जा रहा है, और
5. सभी समूहों के द्वारा काम पूरा कल लेने के बाद उनके अनुभवों के मद्देनजर विचार – विमर्श शुरू किया जाता है. प्रेक्षकों से कहा जाता है कि वे प्रेक्षण पत्रों के आधार पर रिपोर्ट दें कि उन्होंने अभ्यास के दौरान क्या देखा. विचार विमर्श के फलस्वरूप निम्नलिखित मुद्दे उभर सकते हैं :

   ➢ कुछ सदस्य समग्र समस्या की अनदेखी कर देते हैं और इसे केवल व्यक्तिगत कार्यांश के रूप में ही देखते हैं,

- कछ व्यक्तियों का व्यवहार स्वार्थपूर्ण होता है; उन्हें अपने कार्य निष्पादन की ही चिंता रहती है,
- टीम के सदस्य यह नहीं पहचान पाते कि वे सफलता प्राप्त करने अपने समूह के अन्य सदस्यों की मदद कैसे कर सकते हैं,
- जब कार्यांश को पूरा करने में प्रगति नहीं होती तो हताशा उपजने लगती है,
- हताशा के कारण नियम तोड़ने के प्रयास होने लगते हैं,
- समूह के कुछ सदस्य प्रयास करना ही बंद कर देते हैं,
- दूसरों को टुकड़े दिए जाने के दो अर्थ निकाने जा सकते हैं–एक तो दूसरों की मदद करना और दूसरा, कार्यांश से पीछे हटना,
- यदि समूह के सदस्यों को मदद देने के अवसरों को पहचानना और उनका लाभ उछाना है तो यह जरूरी है कि वे अपने समूह के सभी सदस्यों की प्रगति में रुचि लेते रहें,
- कुछ सदस्य बोले बिना ही दूसरों पर प्रभावी रहने (Dominate) की कोशिश करते हैं,
- प्रतिस्पर्धा एक ऐसी ताकत है जिसका उपयोग सकारात्मक रूप से समूह की सफलता के लिए किया जा सकता है या विध्वंसातमक रूप से स्वयं के स्वार्थ के लिए,
- प्रभावी सम्प्रेषण का अभाव, सफलता के रास्ते में एक बड़ी बाधा है. यदि टीमों के सदस्य आपस में सम्प्रेषण कर पाते तो कार्यांश काफी आसान हो जाता,
- बिना बोले सम्प्रेषण भी बहुत प्रभावी हो सकता है, और
- टुकड़ों को दूसरों को देने के लिए टीमें कोई रणनीति बना सकती हैं.

चर्चा का नेतृत्व करते समय व्यवहार पर आधरित प्रश्न बहुत सावधानीपूर्वक पूछे जाने चाहिए. समूह को सीखने के बिंदुओं के बारे में अपने निष्कर्ष स्वयं निकालने के लिए प्रेरित करना चाहिए. समूह ने क्या सीखा यह बताने के लिलच से प्रशिक्षक को बचना चाहिए. इसमें यह खतरा होता है कि प्रशिक्षणार्थी सीख को नकार दें और उन्हें ऐसा लगे कि उन पर कुछ थोपा जा रहा है. उदाहरण के लिए, प्रशिक्षक यह कह सकता है, "मैने देखा कि जोशीजी ने पूरा वर्ग तो बना लिया लेकिन फिर उनकी रुचि खत्म हो गई. ऐसा क्यों हुआ और उनकी टीम के अन्य सदस्यों को क्या लगा ?"

चर्चा के अंत में प्रशिक्षक को समूह को इस के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वे उनके अनुभवों को अपने–अपने कार्यस्थल की परिस्थिति से जोड़ने की कोशिश करें.

भिन्नताएँ :

1. जब एक व्यक्ति एक वर्ग बना लेता है और समूह के अन्य सदस्यों के साथ सहयोग करने में असफल हो जाता है तब बाकि चार सदस्य दो–दो के उपसमूहों में बंट कर बचे हुए हिस्सों से वर्ग बनाने की कोशिश करते हैं. वे नतीजों पर चचा करते हैं और अभ्यास आगे बढ़ जाता है,
2. पांच व्यक्तियों के समूह को स्वयं प्रशिक्षक, अन्य किसी नामांकित व्यक्ति या प्रेक्षक की सहायता उपलब्ध करवाई जा सकती है. यह व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जिसने स्वयं यह अभ्यास पहले किया हो,
3. वह व्यक्ति केवल इतनी सलाह दे कि कार्यांश क्या हे और टीम के अन्य सदस्यों को मदद देने के कौन से विकल्प उपलब्ध हैं. यह सलाह भी दी जा सकती है कि टीम की सफलता के लिए किसी सदस्य को अपना वर्ग तोड़ना पड़े, या वर्ग के वांछित आकार की पुष्टि की जा सकती है, या यह बताया जा सकता है कि सभी टुकड़ों का उपयोग हो जाना चाहिए,
4. दस व्यक्तियों के समूह बनाए जा सकते हैं. ऐसे एक समूह के लिए पांच–पांच वर्गों के टुकड़ों के एक समान सेट दिए जा सकते हैं. छः से नौ व्यक्तियों के समूह भी बनाए जा सकते हैं, जिनकं लिए प्रति व्यक्ति एक वर्ग दिया जा सकता है,
5. एक अंर्तसमूह प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है, जिसमें प्रथम आने वाले समूह के लिए उचित मान्यता का प्रावधान हो,
6. सभी सदस्यों को समस्या सुलझाने के बीच बोलने की अनुमति दी जा सकती है या किसी एक सदस्य को बोलने की अनुमति दी जा सकती है, और
7. सदस्यों को समस्या सुलझाने के बीच एक दूसरे के लिए संदेश लिखने की अनुमति दी जा सकती है.

वर्ग के टुकड़ों का सेट बनाने के लिए निर्देश :

एक सेट में पांच लिफाफे होते हैं जिनमें प्लास्टिक या कार्ड बोर्ड के विभिन्न आकारों में काटे हुए टुकड़े होते हैं. इन टुकड़ों को विधिवत् जमाने पर उनसे समान आकार के पांच वर्ग बनते हैं. पांच व्यक्तियों के प्रत्येक समूह को एक सेट दिया जाना चाहिए.

एक सेट बनाने के लिए (6" x 6" 150 एमएम x 150 एमएम) के पांच कार्डबोर्ड या प्लास्टिक के वर्ग लें. उन पर नीचे दिए अनुसार पेंसिल से निशान लगा लें. काटते समय यह ध्यान रखें कि एक ही प्रकार के सब टुकड़े आपस में एकदम बराबर हों. काटने के बाद पेंसिल के निशान मिटा देवें।

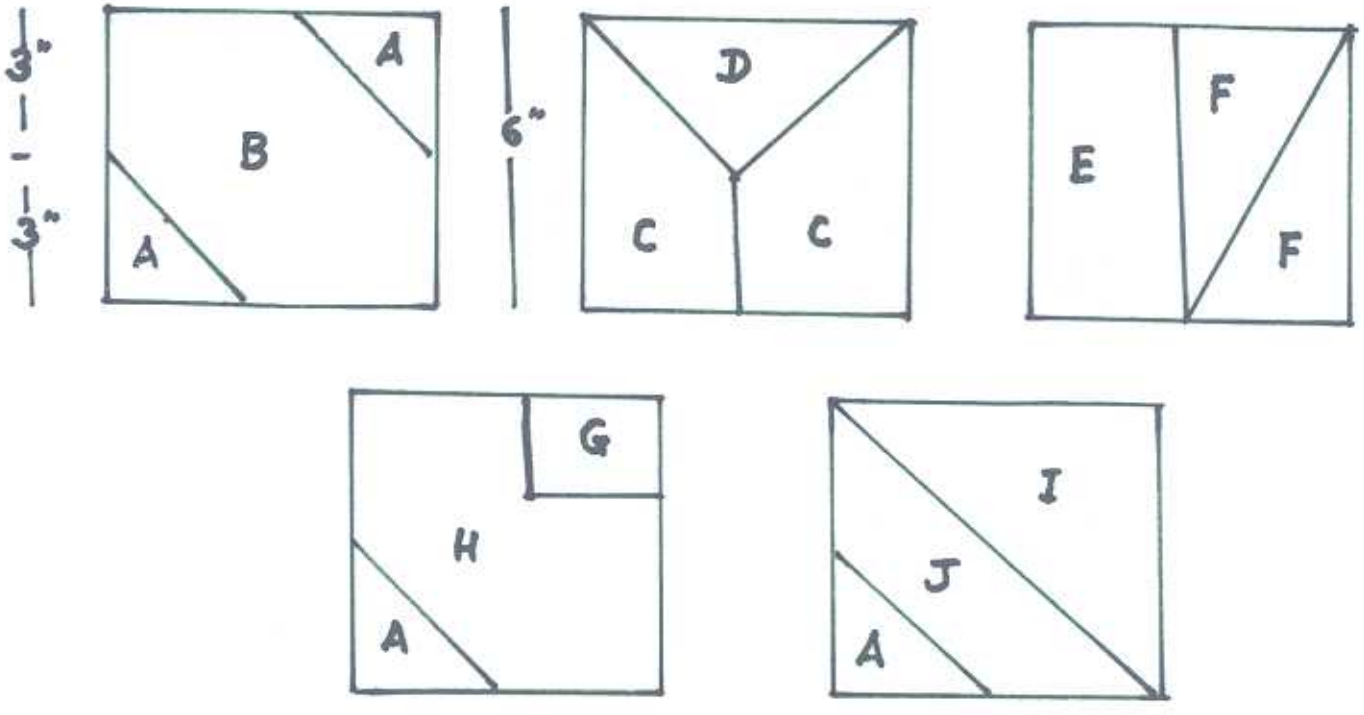

किसी एक वर्ग को बनाने के लिए कई प्रकार के संयोजन संभव हैं, लेकिन सभी पांच वर्ग बनाने के लिए एक ही संयोजन संभव है. बने हुए निशानों के अनुसार टुकड़ों को काट लें और उन पर दिया हुआ अक्षर यथा ए, बी, सी, अंकित कर दें.

पांच लिफाफे लेकर उन पर 1 से 5 तक अंक लिख दें. काटे हुए टुकड़ों को पांचों लिफाफों में नीचे दिए अनुसार रख दें :

लिफाफा संख्या 1 में आई, एच, ई नामक टुकडे डाले।
लिफाफा संख्या 2 में ए, ए, ए, व सी नामक टुकडे डाले।
लिफाफा संख्या 3 में ए व जे नामक टुकडे डाले।
लिफाफा संख्या 4 में डी व एफ नामक टुकडे डाले।
लिफाफा संख्या 5 में जी, बी, एफ व सी नामक टुकडे डाले।

प्रत्येक टुकड़े पर लिखा गया अक्षर मिटा दें और उसके स्थान पर उस लिफाफे का नम्बर लिख दें जिसमें इसे रखा जाना है. इस नम्बर की सहायता से इन्हें बाद में आसानी से अलग–अलग लिफाफों में रखा जा सकेगा.

प्रत्येक सेट अलग–अलग रंग के प्लास्टिक या कार्डबोर्ड से बनाया जा सकता है.

ब्रोकन स्वायर निर्देश शीट :

आप में से प्रत्येक के पास एक लिफाफा है जिसमें वर्ग बनाने के लिए कार्ड बोर्ड/प्लास्टिक के कुद टुकड़े रखे हैं. जब आपको संकेत दिया जाए तब आपको काम शुरू करना है.

आपके समूह का काम है – बराबर माप के पांच वर्ग बनाना. समूह का काम तब तक पूरा नहीं माना जाएगा जब तक प्रत्येक सदस्य के सामने एक पूर्ण वर्ग (सभी समान माप के) न रखा हो.

इस अभ्यास के दौरान आपके समूह को नीचे दिए गए नियमों का पालन करना है :

1. कोई भी सदस्य बोल नहीं सकता, और
2. कोई भी सदस्य दूसरे सदस्य से कोई टुकड़ा संकेत से नहीं मांग सकता. (सदस्य स्वेच्छा से दूसरे सदस्यों को टुकड़े देना चाहे तो दे सकते हैं).

ब्रोकन स्क्वायर प्रेक्षक निर्देश पत्रक

आपका कार्य कुछ प्रेक्षक का और कुछ निर्णायक का है. निर्णायक के रूप में आपको यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक सदस्य निम्नलिखित नियमों का पालन करे :

1. आपस में इशारेबाजी, बातचीत या संदेशों का आदान–प्रदान न करें,
2. सदस्य दूसरे सदस्यों को टुकड़े दे सकते हैं, किंतु ले नहीं सकते,
3. सदस्य, टुकड़ों को बीच में इस प्रकार न रखें कि कोई भी ले ले, और
4. इस बात की अनुमति है कि यदि कोई सदस्य चाहे तो अपने सारे टुकड़े किसी को दे दे, यहां तक कि बने हुए वर्ग को भी.

प्रेक्षक के तौर पर निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दीजिए :

1. कौन स्वेच्छा से दूसरों को टुकड़े देता है ?
2. क्या किसी ने स्वयं का वर्ग बनाने के बाद स्वयं को समूह की समस्या सुलझाने से अलग कर लिया है ?
3. क्या कोई लगातार अपने टुकड़ों को ले कर संघर्ष कर रहा है ?
4. कितने लोग टुकड़ों को जोड़ने के लिए गतिशीलता से प्रयास कर रहे हैं ?
5. अपने समूह के सदस्यों की प्रगति में कौन सक्रिय रुचि ले रहा है ?
6. निराशा (Frustration) और बेचैनी (Anxiety) का स्तर क्या है ?
7. क्या समूह के कार्य में ऐसा कोई मोड़ आया जिसके बाद समूह ने सहयोग करना शुरू कर दिया ? और
8. क्या किसी सदस्य ने नियम तोड़ने का प्रयास किया ? (बोल कर या इशारे से ताकि साथी सदस्यों को मदद मिले.)